**Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)**
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886|
Vol. 19 Issue 01, January- 2024
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

# माध्यमिक स्तर की छात्राओं के मानसिक विकास स्तर पर पड़ने वाले संवेगात्मक विकास के प्रभाव का अध्ययन

**संध्या श्रीवास्तव**

शोधार्थी, षिक्षा संकाय, सेम ग्लोबल विश्वविद्यालय, रायसेन (म.प्र.)

**डॉ. मंजू अग्निहोत्री**

सेम ग्लोबल विश्वविद्यालय, रायसेन (म.प्र.)

प्रस्तुत शोध में माध्यमिक स्तर की छात्राओं के मानसिक विकास स्तर पर पड़ने वाले संवेगात्मक विकास के प्रभाव का अध्ययन किया गया है। इस कार्य हेतु प्रतिदर्श के रूप में षासकीय माध्यमिक विद्यालय की कक्षा 10वीं की 100 छात्राओं का यादृच्छिक प्रतिदर्श विधि से चयन करके उन पर डॉ. एस.एस. जलोटा के 'मानसिक योग्यता परीक्षण' तथा स्वनिर्मित 'संवेगात्मक विकास मापनी' नामक प्रश्नावली का प्रशासन किया गया। क्रांतिक अनुपात परीक्षण के द्वारा संकलित आंकड़ों का विश्लेषण किया गया। शोधकार्य से प्राप्त परिणामों के अनुसार माध्यमिक स्तर की छात्राओं के मानसिक विकास स्तर–षाब्दिक योग्यता/आंकिक योग्यता पर संवेगात्मक विकास का सार्थक प्रभाव ज्ञात नहीं हुआ जबकि मानसिक विकास स्तर–तार्किक योग्यता/समग्र मानसिक योग्यता पर संवेगात्मक विकास का सार्थक प्रभाव ज्ञात हुआ।

**मुख्य शब्द :** माध्यमिक स्तर, छात्राएं, मानसिक विकास, संवेगात्मक विकास

शिक्षा एक ऐसा साधन है जो जन–जीवन का उपयुक्त एवं उन्नत पथ प्रशस्त करती है तथा व्यक्ति को समाज की आशाओं, आकांक्षाओं की पूर्ति करने हेतु सक्षम बनाती है। शिक्षा का कार्य जीवन भर चलता रहता है। व्यक्ति जन्म से लेकर मृत्यु तक कुछ न कुछ सीखता रहता है। शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जो मनुष्य की जन्मजात शक्तियों के स्वाभाविक और पूर्ण उन्नति में योगदान देती है, यह उसकी वैयक्तिकता का पूर्ण विकास करती है, उसे अपने वातावरण से सामंजस्य स्थापित करने में सहायता देती है। उसे जीवन और नागरिकता के कर्तव्यों और दायित्व के लिए तैयार कर उसके व्यवहार, विचार और दृष्टिकोण में ऐसा परिवर्तन करती है जो समाज, देश और विष्व के लिए हितकर होता है। इस परिवर्तन का नाम विकास है।

आज हमारा देष भारत दिन–प्रतिदिन विकास की ओर अग्रसर होने वाला देश है, जहाँ आर्थिक व सामाजिक विकास की नवनीतियों के साथ शिक्षा का विकास व प्रसार भी एक विशेष चिंतन का विषय है। ऐसी अवस्था में देश की विभिन्न शिक्षा समस्याओं को उचित रूप से सुलझाने हेतु वर्तमान शिक्षा एवं छात्राओं की समस्याओं का परिस्थितियों एवं घटनाओं के विषय में अध्ययन करना आवश्यक है। छात्राओं पर विभिन्न प्रकार की दशाएं अपना प्रतिकूल प्रभाव डालती है। जैसे अध्यापकों का अनुचित व्यवहार, सामाजिक–आर्थिक स्थितियाँ, पारिवारिक वातावरण तथा मानसिक स्वास्थ्य इत्यादि। बच्चे द्वारा सामान्य व समायोजनपूर्व व्यवहार प्रदर्शित न करना, उसके मानसिक विकास की अवस्था को बताता है।

आधुनिक शिक्षा में वैज्ञानिक एवं मनोवैज्ञानिक प्रवृत्तियों के उदय से शिक्षण अवस्था में जटिलता प्रवेश कर गई है और इस जटिलता के दौर में छात्राएं तभी सफल हो सकती है जब वह मानसिक रूप से पूर्णतः विकसित व स्वस्थ हो और अपने कार्य क्षेत्र से सन्तुष्ट हा। छात्राओं के मानसिक विकास पर असर डालने में कार्य का अत्यधिक भार, विद्यालयों में उचित शैक्षिक उपकरणों का अभाव, सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियाँ, समाज में संशयपूर्ण व विपरीत स्थितियाँ, पारिवारिक वातावरण, अस्वस्थ निवास स्थान, अध्यापकों का अनुचित व्यवहार, विद्यालय की वातावरणीय दशा आदि कारक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अतः शिक्षण कार्य को सुचारू रूप से चलाने के लिए आवश्यक है कि उन सभी कारकों का यथासम्भव निवारण करने का प्रयत्न किया जाए जो कि छात्राओं के मानसिक विकास में यथासम्भव बाधा पहुँचाते हैं।

छात्राओं के मानसिक विकास में उनके संवेगात्मक विकास की भी महत्वपूर्ण भूमिका होने के कारण ही हमारे द्वारा छात्राओं के मानसिक विकास स्तर पर उनके संवेगात्मक विकास के प्रभाव का अध्ययन करने का निष्चय करते हुए इस षोध समस्या का चयन अपने षोध कार्य हेतु किया ह।

प्रस्तुत शोध से संबंधित पूर्व में भी कुछ शोध कार्य किये गये हैं जैसे – **पाण्डेय, विष्णु प्रकाश (1989)** ने अपने अध्ययन के निष्कर्षतः पाया कि सरस्वती विद्यामंदिर के विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता कान्वेंट एवं शासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों से सार्थक रूप से उच्च पाई गयी। **राजगुरू, एम.एस. (1991)** ने अपने अध्ययन के निष्कर्षतः पाया कि गणितीय उपलब्धि तथा संख्यात्मक अभिक्षमता, बुद्धि तथा संख्यात्मक अभिक्षमता के मध्य सार्थक धनात्मक सहसंबंध पाया गया। **निगम एवं शर्मा (1999)** ने अपने अध्ययन के निष्कर्षतः पाया कि घर का वातावरण बालक के संज्ञानात्मक स्तर को भी प्रभावित करता है। **बंधोपाध्याय, पी. एवं घोष, एस. (2000)** ने अपने अध्ययन के निष्कर्षतः पाया कि छात्र व छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य तथा शैक्षणिक उपलब्धि के मध्य धनात्मक सहसंबंध पाया गया। **झा, ए.पी. (2005)** ने

अपने अध्ययन के निष्कर्षतः पाया कि ग्रामीण क्षेत्र के छात्र व छात्राओं को शहरी क्षेत्र के छात्र/छात्राओं की तुलना में मानसिक स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का अधिक सामना करना पड़ता है। **कुमार, रीतु एवं अन्य (2011)** ने अपने अध्ययन के निष्कर्षतः पाया कि मानसिक स्वास्थ्य तथा तनाव के मध्य ऋणात्मक सहसंबंध पाया गया। **वर्मा, उर्मिला, दवे, अर्चना, निगम, प्रो. भूपेन्द्र (2011)** ने अपने अध्ययन के निष्कर्षतः पाया कि पारिवारिक वातावरण का छात्र/छात्रा/विद्यार्थियों की संख्यात्मक योग्यता– सामान्य बुद्धि पर सकारात्मक प्रभाव पाया गया। **साहू, राकेश एवं रैकवार, कविता (2013)** ने अपने अध्ययन के निष्कर्षतः पाया कि मानसिक स्वास्थ्य तथा शैक्षणिक उत्कृष्टता के मध्य सार्थक संबंध पाया गया। **बुसारी, अफुसात ओलानाइक (2016)** अपने अध्ययन के निष्कर्षतः पाया कि प्रतिभाषाली विद्यार्थियों के शैक्षणिक तनाव के निर्धारण में संवेगात्मक बुद्धि, आत्मसम्मान एवं चिंता की प्रमुख प्रेरकों के रूप में भूमिका पाई गई। **गुप्ता, लीलेश एवं गुप्ता, शालिनी (2018)** ने अपने अध्ययन के निष्कर्षतः पाया कि किषोरावस्था के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि व मानसिक स्वास्थ्य के मध्य उच्च स्तर का सार्थक धनात्मक सहसंबंध पाया गया।

**उद्देश्य** :– माध्यमिक स्तर की छात्राओं के मानसिक विकास स्तर–षाब्दिक योग्यता/आंकिक योग्यता/तार्किक योग्यता/समग्र मानसिक योग्यता पर संवेगात्मक विकास के प्रभाव का अध्ययन करना।

**परिकल्पना** :–

1. माध्यमिक स्तर की छात्राओं के मानसिक विकास स्तर–षाब्दिक योग्यता पर संवेगात्मक विकास का सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा।
2. माध्यमिक स्तर की छात्राओं के मानसिक विकास स्तर–आंकिक योग्यता पर संवेगात्मक विकास का सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा।
3. माध्यमिक स्तर की छात्राओं के मानसिक विकास स्तर–तार्किक योग्यता पर संवेगात्मक विकास का सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा।
4. माध्यमिक स्तर की छात्राओं के मानसिक विकास स्तर–समग्र मानसिक योग्यता पर संवेगात्मक विकास का सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा।

**उपकरण :—**

1. इस अनुसंधान में छात्राओं के मानसिक विकास स्तर के मापन हेतु डॉ. एस.एस. जलोटा के 'मानसिक योग्यता परीक्षण' का उपयोग किया गया है।
2. इस अनुसंधान में छात्राओं के संवेगात्मक विकास स्तर का मापन हेतु स्वनिर्मित संवेगात्मक विकास मापनी का उपयोग किया गया है।

**विधि :—**

सर्वप्रथम षिवपुरी जिले में स्थित चार षासकीय माध्यमिक विद्यालयों की कक्षा 10वों की 100 छात्राओं का यादृच्छिक प्रतिदर्ष विधि से चयन करके उन पर डॉ. एस.एस. जलोटा के 'मानसिक योग्यता परीक्षण' तथा स्वनिर्मित 'संवेगात्मक विकास मापनी' नामक प्रश्नावली का प्रशासन किया गया। क्रांतिक अनुपात परीक्षण के द्वारा संकलित आंकड़ों का विश्लेषण किया गया। प्राप्त परिणामों के आधार पर निष्कर्ष निकाले गये।

## परिणामों का विश्लेषण :—

**परिकल्पना – 1 :** माध्यमिक स्तर की छात्राओं क मानसिक विकास स्तर–षाब्दिक योग्यता पर संवेगात्मक विकास का सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा।

**सारणी क्रमांक – 01**

**ek/;fed Lrj dh Nk=kvksa ds ekufld fodkl Lrj&'kkfCnd ;ksX;rk ij laosxkRed fodkl ds ÁHkko laca/kh ifj.kke**

| संवेगात्मक विकास का स्तर | संख्या | मध्यमान | मानक विचलन | क्रांतिक अनुपात मान | सार्थकता |
|---|---|---|---|---|---|
| उच्च | 46 | 29.24 | 5.00 | 0.56 | 0.05 स्तर पर असार्थक |
| निम्न | 54 | 28.61 | 6.23 | | |

स्वतंत्रता के अंश – 98 0.05 स्तर के लिये निर्धारित न्यूनतम मान – 1.98

ऊपर सारणी में दिये गए परिणामों से पता चलता है कि उच्च संवेगात्मक विकास स्तर वाली माध्यमिक स्तर की छात्राओं के मानसिक विकास स्तर–षाब्दिक योग्यता का मध्यमान 29.24 जबकि निम्न संवेगात्मक विकास स्तर वाली माध्यमिक स्तर की छात्राओं के मानसिक विकास स्तर–षाब्दिक योग्यता का मध्यमान 28.61 पाया गया, इन दोनों मध्यमानों में 0.63 का अंतर है और मध्यमानों का यह अंतर सांख्यिकीय दृष्टि से असार्थक है क्योंकि प्राप्त क्रांतिक अनुपात का ये मान 0.56 स्वतंत्रता के अंश 98 पर सार्थकता के 0.05 स्तर हेतु निर्धारित मान 1.98 की अपेक्षा कम है।

अतः ऊपर दिये गए परिणामों के आधार पर कह सकते हैं कि उच्च तथा निम्न संवेगात्मक विकास स्तर वाली माध्यमिक स्तर की छात्राओं के मानसिक विकास स्तर–षाब्दिक योग्यता में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया, अर्थात् माध्यमिक स्तर की छात्राओं के मानसिक विकास स्तर–षाब्दिक योग्यता पर संवेगात्मक विकास (उच्च व निम्न) का सार्थक प्रभाव ज्ञात नहीं हुआ।

अतः उपरोक्त परिणामों के परिप्रेक्ष्य में पूर्व में ली गई परिकल्पना ''माध्यमिक स्तर की छात्राओं के मानसिक विकास स्तर–षाब्दिक योग्यता पर संवेगात्मक विकास का सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा'' स्वीकृत की जाती है।

**परिकल्पना – 2 :** माध्यमिक स्तर की छात्राओं के मानसिक विकास स्तर–आंकिक योग्यता पर संवेगात्मक विकास का सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा।

**सारणी क्रमांक – 02**

**ek/;fed Lrj dh Nk=kvksa ds ekufld fodkl Lrj&vkafdd ;ksX;rk ij laosxkRed fodkl ds ÁHkko laca/kh ifj.kke**

| संवेगात्मक विकास का स्तर | संख्या | मध्यमान | मानक विचलन | क्रांतिक अनुपात मान | सार्थकता |
|---|---|---|---|---|---|
| उच्च | 46 | 11.11 | 4.27 | 0.87 | 0.05 स्तर पर असार्थक |
| निम्न | 54 | 10.41 | 3.71 | | |

स्वतंत्रता के अंश – 98 0.05 स्तर के लिये निर्धारित न्यूनतम मान – 1.98

**Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)**
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886|
Vol. 19 Issue 01, January- 2024
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

ऊपर सारणी में दिये गए परिणामों से पता चलता है कि उच्च सवेगात्मक विकास स्तर वाली माध्यमिक स्तर की छात्राओं के मानसिक विकास स्तर—आंकिक योग्यता का मध्यमान 11.11 जबकि निम्न संवेगात्मक विकास स्तर वाली माध्यमिक स्तर की छात्राओं के मानसिक विकास स्तर—आंकिक योग्यता का मध्यमान 10.41 पाया गया, इन दोनों मध्यमानों में 0.70 का अंतर है और मध्यमानों का यह अंतर सांख्यिकीय दृष्टि से असार्थक है क्योंकि प्राप्त क्रांतिक अनुपात का ये मान 0.87 स्वतंत्रता के अंश 98 पर सार्थकता के 0.05 स्तर हेतु निर्धारित मान 1.98 की अपेक्षा कम है।

अतः ऊपर दिये गए परिणामों के आधार पर कह सकते हैं कि उच्च तथा निम्न संवेगात्मक विकास स्तर वाली माध्यमिक स्तर की छात्राओं के मानसिक विकास स्तर—आंकिक योग्यता में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया, अर्थात् माध्यमिक स्तर की छात्राओं के मानसिक विकास स्तर—आंकिक योग्यता पर संवेगात्मक विकास (उच्च व निम्न) का सार्थक प्रभाव ज्ञात नहीं हुआ।

अतः उपरोक्त परिणामों के परिप्रेक्ष्य में पूर्व में ली गई परिकल्पना ''माध्यमिक स्तर की छात्राओं के मानसिक विकास स्तर—आंकिक योग्यता पर संवेगात्मक विकास का सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा'' स्वीकृत की जाती है।

**परिकल्पना — 3 :** माध्यमिक स्तर की छात्राओं के मानसिक विकास स्तर—तार्किक योग्यता पर संवेगात्मक विकास का सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा।

**सारणी क्रमांक — 03**

**ek/;fed Lrj dh Nk=kvksa ds ekufld fodkl Lrj&rkfdZd ;ksX;rk ij laosxkRed fodkl ds ÁHkko laca/kh ifj.kke**

| संवेगात्मक विकास का स्तर | संख्या | मध्यमान | मानक विचलन | क्रांतिक अनुपात मान | सार्थकता |
|---|---|---|---|---|---|
| उच्च | 46 | 26.07 | 6.90 | 2.94 | 0.01 स्तर पर सार्थक |
| निम्न | 54 | 22.31 | 5.62 | | |

स्वतंत्रता के अंश — 98     0.01 स्तर के लिये निर्धारित न्यूनतम मान — 2.63

ऊपर सारणी में दिये गए परिणामों से पता चलता है कि उच्च संवेगात्मक विकास स्तर वाली माध्यमिक स्तर की छात्राओं के मानसिक विकास स्तर–तार्किक योग्यता का मध्यमान 26.07 जबकि निम्न संवेगात्मक विकास स्तर वाली माध्यमिक स्तर की छात्राओं के मानसिक विकास स्तर–तार्किक योग्यता का मध्यमान 22.31 पाया गया, इन दोनों मध्यमानों में 3.76 का अंतर है और मध्यमानों का यह अंतर सांख्यिकीय दृष्टि से सार्थक है क्योंकि प्राप्त क्रांतिक अनुपात का मान 2.94 स्वतंत्रता के अंश 98 पर सार्थकता के 0.01 स्तर हेतु निर्धारित मान 2.63 की अपेक्षा अधिक है।

अतः ऊपर दिये गए परिणामों के आधार पर कह सकते हैं कि उच्च तथा निम्न संवेगात्मक विकास स्तर वाली माध्यमिक स्तर की छात्राओं के मानसिक विकास स्तर–तार्किक योग्यता में सार्थक अंतर पाया गया तथा उच्च संवेगात्मक विकास स्तर वाली छात्राओं का मानसिक विकास स्तर–तार्किक योग्यता निम्न संवेगात्मक विकास स्तर वाली छात्राओं से बेहतर पाई गयी, अर्थात् माध्यमिक स्तर की छात्राओं के मानसिक विकास स्तर–तार्किक योग्यता पर संवेगात्मक विकास (उच्च व निम्न) का सार्थक प्रभाव ज्ञात हुआ।

अतः उपरोक्त परिणामों के परिप्रेक्ष्य में पूर्व में ली गई परिकल्पना ''माध्यमिक स्तर की छात्राओं के मानसिक विकास स्तर–तार्किक योग्यता पर संवेगात्मक विकास का सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा'' अस्वीकृत की जाती है।

**परिकल्पना – 4 :** माध्यमिक स्तर की छात्राओं के मानसिक विकास स्तर–समग्र मानसिक योग्यता पर संवेगात्मक विकास का सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा।

**सारणी क्रमांक – 04**

**ek/;fed Lrj dh Nk=kvksa ds ekufld fodkl Lrj&lexz ekufld ;ksX;rk ij laosxkRed fodkl ds ÁHkko laca/kh ifj.kke**

| संवेगात्मक विकास का स्तर | संख्या | मध्यमान | मानक विचलन | क्रांतिक अनुपात मान | सार्थकता |
|---|---|---|---|---|---|
| उच्च | 46 | 66.41 | 9.84 | 2.65 | 0.01 स्तर पर सार्थक |
| निम्न | 54 | 61.33 | 9.17 | | |

स्वतंत्रता के अंश – 98 0.01 स्तर के लिये निधारित न्यूनतम मान – 2.63

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886|
Vol. 19 Issue 01, January- 2024
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

ऊपर सारणी में दिये गए परिणामों से पता चलता है कि उच्च संवेगात्मक विकास स्तर वाली माध्यमिक स्तर की छात्राओं के मानसिक विकास स्तर–समग्र मानसिक योग्यता का मध्यमान 66.41 जबकि निम्न संवेगात्मक विकास स्तर वाली माध्यमिक स्तर की छात्राओं के मानसिक विकास स्तर–समग्र मानसिक योग्यता का मध्यमान 61.33 पाया गया, इन दोनों मध्यमानों में 5.08 का अंतर है और मध्यमानों का यह अंतर सांख्यिकीय दृष्टि से सार्थक है क्योंकि प्राप्त क्रांतिक अनुपात का मान 2.65 स्वतंत्रता के अंश 98 पर सार्थकता के 0.01 स्तर हेतु निर्धारित मान 2.63 की अपेक्षा अधिक है।

अतः ऊपर दिये गए परिणामों के आधार पर कह सकते हैं कि उच्च तथा निम्न संवेगात्मक विकास स्तर वाली माध्यमिक स्तर की छात्राओं के मानसिक विकास स्तर–समग्र मानसिक योग्यता में सार्थक अंतर पाया गया तथा उच्च संवेगात्मक विकास स्तर वालो छात्राओं का मानसिक विकास स्तर–समग्र मानसिक योग्यता निम्न संवेगात्मक विकास स्तर वाली छात्राओं से बेहतर पाई गयो, अर्थात् माध्यमिक स्तर की छात्राओं के मानसिक विकास स्तर–समग्र मानसिक योग्यता पर संवेगात्मक विकास (उच्च व निम्न) का सार्थक प्रभाव ज्ञात हुआ।

अतः उपरोक्त परिणामों के परिप्रेक्ष्य में पूर्व में ली गई परिकल्पना ''माध्यमिक स्तर की छात्राओं के मानसिक विकास स्तर–समग्र मानसिक योग्यता पर संवेगात्मक विकास का सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा'' अस्वीकृत की जाती है।

**निष्कर्ष** :–

उच्च तथा निम्न संवेगात्मक विकास स्तर वाली माध्यमिक स्तर की छात्राओं के मानसिक विकास स्तर–षाब्दिक योग्यता/आंकिक योग्यता में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया जबकि मानसिक विकास स्तर–तार्किक योग्यता/समग्र मानसिक योग्यता में सार्थक अंतर पाया गया तथा उच्च संवेगात्मक विकास स्तर वाली छात्राओं का मानसिक विकास स्तर–तार्किक योग्यता/समग्र मानसिक योग्यता निम्न संवेगात्मक विकास स्तर वाली छात्राओं से बेहतर पाई गयी, अर्थात् माध्यमिक स्तर की छात्राओं के मानसिक विकास स्तर–षाब्दिक योग्यता/आंकिक योग्यता पर संवेगात्मक विकास (उच्च व निम्न) का सार्थक प्रभाव ज्ञात नहीं हुआ जबकि मानसिक विकास स्तर–तार्किक योग्यता/समग्र मानसिक योग्यता पर संवेगात्मक विकास (उच्च व निम्न) का सार्थक प्रभाव ज्ञात हुआ

## / / संदर्भ ग्रंथ सूची / /

1. अग्रवाल, संध्या (2008) : **शिक्षा मनोविज्ञान,** अनुप्रकाशन, जयपुर, पृष्ठ क्रमांक 168
2. भार्गव, ऊषा (1993) : **किशोर मनोविज्ञान,** राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, द्वितीय संस्करण
3. भटनागर, सुरेष (2007) : **शिक्षा मनोविज्ञान,** आर. लाल बुक डिपो, मेरठ, नवीनतम संस्करण, पृष्ठ क्रमांक 190
4. चौबे, डॉ. सरयू प्रसाद (1966) : **मनोविज्ञान एवं शिक्षा,** लक्ष्मीनारायण अग्रवाल प्रकाषन, अस्पताल मार्ग, आगरा, आठवां संस्करण
5. हकीम, एम.ए.; अस्थाना, विपिन एवं जायसवाल, सीताराम (1991) : **व्यक्तित्व मनोविज्ञान,** विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, द्वितीय संस्करण
6. कुप्पुस्वामी, बी. (1990) : **बाल–व्यवहार और विकास,** कोणार्क पब्लिशर्स प्रा. लि., दिल्ली
7. कौल, लोकेश (2005) : **शैक्षिक अनुसंधान की कार्यप्रणाली,** विकास पब्लिशिंग हाउस प्रा.लि., नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण
8. सिंह, अरूण कुमार (2005) : **शिक्षा मनोविज्ञान,** भारती भवन पब्लिशर्स, पटना
9. वर्मा, डॉ. प्रीती एवं श्रीवास्तव, डॉ. डी. एन. : **आधुनिक सामान्य मनोविज्ञान,** विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, बारहवॉं संषोधित संस्करण
10. **गुप्ता, नीलेश एवं गुप्ता, शालिनी (2018)** ''किशोरावस्था के बालकों के मानसिक स्वास्थ्य का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन'', *रिसर्च लिंक 177, वाल्यूम XVII (10), दिसम्बर 2018, पेज नंबर 17 – 20*
11. **वर्मा, उर्मिला दवे, अर्चना एवं निगम, भूपेन्द्र (2011)** ''विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण का उनकी संज्ञानात्मक योग्यता सामान्य बुद्धि पर प्रभाव का अध्ययन'', *रिसर्च हंट, वाल्यूम 4 इश्यु 4, दिसंबर 2011, पृष्ठ क्रमांक 301–308*
12. **Bandyopadhvay, P. and Gosh, S. (2000)** "A study on relationship among Motivation, Mental Health and Achievement of the school going students", *Asian journal of psychology and education, 33, 5, June 2000, Pg. No.23-28*
13. **Busari, Afusat Olanike (2016)** "Relationship between Emotional Intelligence, Self-Esteem, Anxiety and Academic Stress of the Gifted Children in Oyo State, Nigeria", *Global Journal of Human – Social Science : A Arts and Humanities – Psychology, Volume 16, Issue 5, Version 1.0, 2016, Pg. No. 23 – 34*
14. **Jha, A.P. (2005)** "A study of mental Health of secondary school children", *Indian psychological Review, 64, 3 (sept.2005), Pg. No. 119-122*
15. **Kumar, Reetu et.al. (2011)** "Study of Relationship between Mental Health and Stress of Nursing Students", *Research Hunt, ISSN No. 0973-5569, Vol.VI, Issue IV, Dec.2011, Pg. No. 54-58*

16. **Pandey, Vishnu Prakash (1989)** "A study of the Saraswati Vidyamandirs with reference to the students academic achievement and psychosocial development", *Ph.D., Edu., Univ. of Lucknow, In Fifth Survey of Edu. Research (1988-92), Vol - II, Pg. No. 1338-39*

17. **Rajyaguru, Mahesh S. (1991) ''**A comparative study of over and under achievers in mathematics., Ph.D., Education, Bhavnagar Univ'', *In Fifth Survey of Research in Education. (1988-92), Vol II, Pg. No. 1902*

18. **Sahu, Rakesh & Raikwar, Kavita (2013)** ''Impact of Mental Health in Achieving Academic Excellence'', *Education and Development, ISSN No. 2320-3684, Year 2013, Vol. No. II/1,Pg. No. 27-29*